Online at: https://researchtrendsjournal.com
Indexed Journal

ISSN No: 2584-282X
Peer Reviewed Journal

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 3; Issue 4; 2025; Page No. 208-213

Received: 02-04-2025
Accepted: 13-06-2025
Published: 23-07-2025

महिलाओं को आर्थिक आज़ादी दिलाने में स्वरोजगार कार्यक्रमों की भूमिका

[1]सरला माथनकर, [2]राम सिंह कुशवाहा, [3]भानु साहू

[1-3]अर्थशास्त्र विभाग, मध्यांचल प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, भोपाल, मध्य प्रदेश, भारत

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.18340574

Corresponding Author: सरला माथनकर

सारांश

महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए, हमें यह पक्का करना होगा कि उन्हें शिक्षा और जानकारी मिले जो उन्हें अपने आस-पास की दुनिया को समझने, अपने जीवन के बारे में सोच-समझकर फैसले लेने और आखिरकार उत्पीड़न से बाहर निकलने में मदद करे। कुल मिलाकर आर्थिक विकास इस बात पर निर्भर करता है कि महिलाओं की क्षमता में निवेश किया जाए और उन्हें अपनी पसंद ज़ाहिर करने की आज़ादी दी जाए। लंबे समय से, यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में और पूरी दुनिया में, महिलाओं के सशक्तिकरण का मुद्दा राजनीतिक चर्चाओं में हावी रहा है। हर परिवार, समुदाय और देश का भविष्य महिलाओं के सशक्तिकरण पर निर्भर करता है। महिलाओं को शिक्षित करने के भी फायदे हैं। इससे देश की अर्थव्यवस्था और साक्षरता दर दोनों को फायदा होता है। पढ़ी-लिखी माँओं के लिए होशियार बच्चों की परवरिश करना आसान होता है। अब महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल करना मुमकिन है। लगातार कोशिशों से, हम एक ऐसा समाज बना सकते हैं जहाँ महिलाओं के पास पहले से कहीं ज़्यादा अधिकार हों। महिलाओं को "तुम नहीं कर सकती" के बजाय "तुम कर सकती हो" सुनने को मिलेगा।

मूलशब्द: महिलाओं, आर्थिक, स्वरोजगार, कार्यक्रमों और सामाजिक

प्रस्तावना

संसाधन भौतिक, मानवीय और सामाजिक अपेक्षाओं और आवंटनों को संदर्भित करते हैं। एजेंसी किसी व्यक्ति के लक्ष्यों को परिभाषित करने, उन पर कार्य करने और अपने स्वयं के रणनीतिक जीवन परिणामों पर निर्णय लेने की क्षमता या योग्यता का बोध है। उपलब्धियों में बेहतर कल्याण से लेकर राजनीति में महिलाओं का समान प्रतिनिधित्व प्राप्त करने तक कई तरह के परिणाम शामिल हैं। दूसरे शब्दों में, अंतर्निहित धारणा यह है कि महिला सशक्तिकरण कुछ उपलब्धियों तक पहुँचने के लिए संसाधनों को एक एजेंट तरीके से प्राप्त करने और उनका उपयोग करने की प्रक्रिया है। इसी प्रकार, मनोवैज्ञानिक शोध बताते हैं कि सशक्तिकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जो लोगों को उन मुद्दों पर कार्य करने और उन्हें बेहतर बनाने में सक्षम बनाती है जो उनके व्यक्तिगत जीवन, उनके समुदायों और उनके समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं। ये परिभाषाएँ महिलाओं की व्यक्तिगत क्षमताओं के विस्तार और व्यक्तिगत पसंद के स्वतंत्र प्रयोग पर ज़ोर देती हैं। हालाँकि, पिछले शोधों ने इस बात पर प्रकाश डाला है कि चुनने का कार्य अनिवार्य रूप से महिलाओं के लिए प्रगतिशील परिणामों के बराबर नहीं है, क्योंकि महिलाओं की व्यक्तिगत पसंद ऐतिहासिक और संरचनात्मक रूप से निर्धारित होती है।

महिला सशक्तिकरण का विषय कई वर्षों से हमारे देश सहित दुनिया भर में सबसे ज्वलंत और चर्चित मुद्दों में से एक रहा है। परिवार, समाज और देश के उज्ज्वल भविष्य के लिए महिलाओं का सशक्तीकरण आवश्यक है। पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था कि लोगों को जागृत करने के लिए हमें सबसे पहले महिलाओं को जागृत करना होगा, क्योंकि एक बार एक महिला जागृत हो गई तो उसके साथ पूरा राष्ट्र और परिवार जागृत हो जाता है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है महिलाओं को पूर्ण सामाजिक अधिकार, आर्थिक स्थिरता, राजनीतिक अधिकार, न्यायिक शक्ति और अन्य अधिकार प्रदान करना। महिला सशक्तिकरण एक सक्रिय,

बहुआयामी प्रक्रिया है जो महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी क्षमता और शक्तियों का एहसास कराती है। महिला सशक्तिकरण का तात्पर्य महिलाओं के लिए ऐसे वातावरण का निर्माण करना है जहाँ वे अपने व्यक्तिगत लाभ, परिवार और समाज के लिए स्वयं निर्णय ले सकें, आत्म-सम्मान, गरिमा और गरिमा के साथ स्वतंत्र रूप से अपना जीवन जी सकें, सामाजिक और आर्थिक न्याय के समान अधिकार प्राप्त कर सकें और सुरक्षित एवं आरामदायक कार्य वातावरण प्राप्त कर सकें।

हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों पर पड़ने वाले प्रभावों को अलग-अलग किया जाना चाहिए, न कि उन्हें एक साथ मिलाकर। हालाँकि कार्यक्रम मूल्यांकन में महिला सशक्तिकरण सूचकांकों का उपयोग करना आम बात है, जो प्रमुख क्षेत्रों के कई संकेतकों के परिणामों को एकत्रित करते हैं, वास्तव में, पिछले शोध बताते हैं कि माइक्रोफाइनेंस सेवाओं में महिलाओं की भागीदारी से उनकी बढ़ी हुई स्वायत्तता, महिला माइक्रोफाइनेंस उधारकर्ता और उनके पति के बीच संबंधों को अस्थिर कर सकती है और इस प्रकार अंतरंग साथी हिंसा के जोखिम को बढ़ा सकती है। यह महिला सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों (अर्थात, व्यक्तिगत और संबंधपरक) पर प्रस्तुत मिश्रित परिणामों की व्याख्या कर सकता है और महिला सशक्तिकरण के विभिन्न पहलुओं को सावधानीपूर्वक और स्पष्ट रूप से चुनने और यह परिभाषित करने के महत्व को दर्शाता है कि किसी हस्तक्षेप का किस आयाम (आयामों) पर प्रभाव पड़ सकता है।

महिला सशक्तिकरण आंदोलन का लक्ष्य राजनीति, अर्थशास्त्र और समाज में लैंगिक असमानता को पाटना है। "महिला सशक्तिकरण" की अवधारणा 19वीं शताब्दी तक गढ़ी नहीं गई थी। शक्ति का हस्तांतरण ही सशक्तिकरण की मूल अवधारणा है। हज़ारों वर्षों से, दुनिया भर में महिलाओं को एक कमज़ोर लिंग माना जाता रहा है। भारत की स्वतंत्रता के बावजूद, महिलाओं को पुरुषों के समान सामाजिक-आर्थिक दर्जा प्राप्त नहीं था। परिणामस्वरूप, गैर-सरकारी संगठन और भारत सरकार हमारे समाज में महिलाओं की समग्र उन्नति में योगदान करते हैं। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 1975 से 1985 तक "महिला दशक" शब्द का प्रयोग किया गया था। इसके अतिरिक्त, भारत ने 2001 को "अंतर्राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण वर्ष" घोषित किया, जिसे मनाया भी गया। महिलाओं के दृष्टिकोण को स्वीकार करना, उन्हें समझने का प्रयास करना और शिक्षा, जागरूकता, साक्षरता और प्रशिक्षण के माध्यम से महिलाओं की स्थिति को ऊँचा उठाना, ये सभी महिला सशक्तिकरण (या महिला सशक्तिकरण) को परिभाषित करने के उदाहरण हैं।

साहित्य समीक्षा

वेलु, पलानी. (2013) [1]. वर्तमान अध्ययन ने सलेम जिले के इडापडी शहर में महिलाओं के सशक्तीकरण की जांच की। यह पत्र सलेम जिले के इडापडी के ग्रामीण क्षेत्र की स्वरोजगार में शामिल कई महिलाओं के आर्थिक सशक्तीकरण पर केंद्रित है। विश्लेषण से संकेत मिलता है कि स्वरोजगार न केवल उत्तरदाताओं को अतिरिक्त आय उत्पन्न करने में मदद करता है बल्कि उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र और आत्मनिर्भर भी बनाता है। अध्ययन से पता चलता है कि स्वरोजगार से पहले और बाद में उत्तरदाताओं की आय, व्यय और बचत में काफी अंतर है। स्वरोजगार में शामिल महिलाएं आत्म संतुष्टि, स्वतंत्रता महसूस करती हैं और उनकी दृढ़ संकल्प की भावना उन्हें सफलता प्राप्त करने में मदद करती है। अध्ययन का निष्कर्ष है कि न केवल महिलाओं की स्थिति में बल्कि उनके प्रति समाज के रवैये में भी बदलाव लाना होगा। इसलिए महिलाओं की छवि को एक निष्क्रिय दर्शक और प्राप्तकर्ता से बदलकर एक सकारात्मक कर्ता और सफल व्यक्ति की छवि में बदलने को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

गुप्ता, श्रद्धा एट अल. (2023) [2, 3]. इस पत्र का उद्देश्य महिला उद्यमियों पर मौजूदा शोध का सारांश प्रस्तुत करना और उसे वर्गीकृत करना है। स्व-रोज़गार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर साहित्य की विशेषता और परिभाषा बताने वाले विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों और शोध धाराओं की पहचान करना और उनके अंतर्संबंधों को उजागर करना इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त, यह इस क्षेत्र के मूल का प्रतिनिधित्व करने वाले नवीनतम कार्यों की तुलना साहित्य में उभरते रुझानों और कमियों की पहचान करने का प्रयास करता है। यह दस्तावेज़ ग्रंथसूची संबंधी आँकड़ों पर आधारित है। इस विषय पर शोध उद्यमिता पर आधारित दो अलग-अलग सैद्धांतिक दृष्टिकोणों में विभाजित है: महिलाएँ और स्व-रोज़गार, और महिलाएँ और सशक्तिकरण। मूल विषयों और विषयों की उपस्थिति की पुष्टि के लिए SCOPUS पत्रिकाओं के नवीनतम प्रकाशनों से 194 शोध पत्रों के आँकड़ों का उपयोग किया गया। इस शोध से सिद्धांत विकास, प्रबंधकीय निर्णय लेने और शिक्षा में व्यावहारिक रूप से योगदान मिलने की उम्मीद है। यह अध्ययन स्व-रोज़गार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर साहित्य के विकास और उसमें शामिल अनेक अध्ययनों की अंतर्निहित संरचना का परीक्षण करता है। इस पत्र का निष्कर्ष 1989 से 2022 तक के सर्वश्रेष्ठ जर्नल, सर्वश्रेष्ठ लेख और सर्वश्रेष्ठ लेखकों के साथ-साथ उनके विभिन्न सहयोगों की पहचान करना है।

गुप्ता, श्रद्धा एट अल. (2023) [2, 3]. इस शोध पत्र का उद्देश्य महिला उद्यमियों पर मौजूदा शोध का सारांश और वर्गीकरण करना है। स्व-रोज़गार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर साहित्य की विशेषता और परिभाषा बताने वाले विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोणों और शोध धाराओं की पहचान करना और उनके अंतर्संबंधों को उजागर करना इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य है। इसके अतिरिक्त, यह इस क्षेत्र के मूल का प्रतिनिधित्व करने वाले नवीनतम कार्यों की तुलना साहित्य में उभरते रुझानों और कमियों की पहचान करने का प्रयास करता है। यह दस्तावेज़ ग्रंथसूची संबंधी आँकड़ों पर आधारित है। इस विषय पर शोध उद्यमिता पर आधारित दो अलग-अलग सैद्धांतिक दृष्टिकोणों में विभाजित है: महिलाएँ और स्व-रोज़गार, और महिलाएँ और सशक्तिकरण। मूल विषयों और विषयों की उपस्थिति की पुष्टि के लिए SCOPUS पत्रिकाओं के नवीनतम प्रकाशनों से 194 शोध पत्रों के आँकड़ों का उपयोग किया गया। इस शोध से सिद्धांत विकास, प्रबंधकीय निर्णय लेने और शिक्षा में व्यावहारिक योगदान की उम्मीद है। यह अध्ययन स्व-रोज़गार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर साहित्य के विकास और इसके अंतर्गत आने वाले अनेक अध्ययनों की अंतर्निहित संरचना का परीक्षण करता है। इस पत्र का निष्कर्ष 1989 से 2022 तक के सर्वश्रेष्ठ जर्नल, सर्वश्रेष्ठ लेख और सर्वश्रेष्ठ लेखकों के साथ-साथ उनके विभिन्न सहयोगों की पहचान करना है।

केएच, मीनाक्षी एट अल. (2022) [4]. स्वयं सहायता समूह की अवधारणा की जड़ें ग्रामीण क्षेत्रों में हैं और इसे ग्रामीण अर्ध-शहरी महिलाओं के जीवन स्तर में सुधार लाने के लिए शुरू किया गया था। आज स्वयं सहायता समूह (SHG) ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी उन्मूलन में एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। भारत में, इस योजना

को ग्रामीण विकास में एक प्रमुख नोडल एजेंसी नाबार्ड की मदद से लागू किया गया था। यह विशेष रूप से ग्रामीण महिलाओं के लिए एक स्वरोजगार सृजन योजना है, जिनके पास अपनी संपत्ति नहीं है। 'सशक्तिकरण' शब्द का अर्थ है शक्ति देना। अंतर्राष्ट्रीय विश्वकोश (1999) के अनुसार, शक्ति का अर्थ है अपने जीवन को वांछित सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक लक्ष्यों या स्थिति की ओर निर्देशित करने की क्षमता और साधन होना। महिला सशक्तिकरण केवल अपने आप में एक लक्ष्य नहीं है, यह समस्त वैश्विक विकास की कुंजी है। सशक्तिकरण एक सक्रिय बहुआयामी प्रक्रिया है जो महिलाओं को जीवन के सभी क्षेत्रों में अपनी पहचान और शक्ति का एहसास कराने में सक्षम बनाती है। यह शोधपत्र SHG के माध्यम से महिला सशक्तिकरण की जाँच करता है और भारत में महिला सशक्तिकरण की वर्तमान स्थिति की भी व्याख्या करता है।

दुर्गारानी, एम. एट अल. (2015) [5]. ग्रामीण भारत में गरीबी उन्मूलन में स्वयं सहायता समूह एक प्रमुख भूमिका निभाते हैं। भारत के विभिन्न भागों में बढ़ती संख्या में गरीब लोग स्वयं सहायता समूहों के सदस्य हैं और बचत और ऋण (एस/सी) के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं। स्वयं सहायता समूहों में एस/सी पर ध्यान सबसे प्रमुख तत्व है और यह पूँजी पर कुछ नियंत्रण बनाने का अवसर प्रदान करता है। स्वयं सहायता समूह प्रणाली महिलाओं को शोषण और अलगाव से धीरे-धीरे मुक्त होने की संभावना प्रदान करने में बहुत प्रासंगिक और प्रभावी साबित हुई है। यद्यपि महिलाएं स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से विभिन्न पहलुओं में खुद को सशक्त बना सकती हैं, इस पत्र का उद्देश्य स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण का पता लगाना है। यह अध्ययन कोयंबटूर जिले में किया गया था और नमूना उत्तरदाता वे महिलाएं थीं जिन्होंने स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से विभिन्न गतिविधियों में खुद को संलग्न किया है। वर्णनात्मक शोध डिजाइन का उपयोग किया गया था।

महिला सशक्तिकरण की आवश्यकता

रोज़मर्रा के काम सौंपकर, हमने अपनी महिलाओं को घर तक ही सीमित कर दिया है। उन्हें यह स्वीकार करने पर मजबूर किया जाता है कि उन्हें सिर्फ़ इन्हीं पदों के लिए और बिना किसी पारिश्रमिक के हटाया गया है। सबसे दुखद बात यह है कि महिलाएँ हर परिवार की कार्यकारी शक्ति होने के बावजूद, उन्हें बातचीत या विकास से भी वंचित रखा जाता है। एक तरह से, हम उन्हें सशक्त बनाकर, उन्हें उड़ने के लिए पंख और साँस लेने के लिए हवा देकर अपने राष्ट्र को मज़बूत कर रहे हैं। महिलाओं को शिक्षा देने के अपने फ़ायदे हैं। इससे साक्षरता दर बढ़ने के साथ-साथ देश की आर्थिक स्थिति भी बेहतर होती है। शिक्षित महिलाएँ प्रतिभाशाली बच्चों का बेहतर पालन-पोषण कर पाती हैं। महिलाओं को सशक्त बनाकर आपराधिक गतिविधियों को काफ़ी हद तक कम किया जा सकता है। अगर महिलाओं को सही मार्गदर्शन दिया जाए, तो वेश्यावृत्ति, मानव तस्करी, यौन उत्पीड़न, ऑनर किलिंग और महिलाओं के ख़िलाफ़ होने वाले अन्य अपराधों को काफ़ी हद तक कम किया जा सकता है। याद रखें कि सभी को सुरक्षित रहने का अधिकार है। एक महिला को भी वही अधिकार मिलने चाहिए जो एक पुरुष को, जो आधी रात को सुरक्षित महसूस करता है। ऐसा करने से पहले हमें उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करनी होगी। दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। इसलिए, यह समझा जाता है कि उनके बिना कोई भी राष्ट्र अपनी पूरी क्षमता हासिल नहीं कर सकता।

महिला सशक्तिकरण का महत्व

नवाचार के इस दौर में, कुल मिलाकर महिलाएँ अपने प्रमुख अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही हैं। ऐसा सशक्तिकरण के वास्तविक महत्व के प्रति उनकी अज्ञानता के कारण है। कुछ समाजों में महिलाएँ असमान रूप से वंचित हैं और उन्हें पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त नहीं हैं। महिलाओं को अधिकार देना ही अनिवार्य रूप से सशक्तिकरण है। उन्हें निर्णय लेने और राजनीति, शिक्षा और समाज जैसी गतिविधियों में भाग लेने का समान अधिकार है। यह महिलाओं के अधिकारों को मान्यता मिलने के साथ आता है। महिलाओं को महत्व दिया जाता है, गरीबी कम होती है और घरेलू हिंसा कम होती है। चूँकि कोई व्यक्ति काम करके अपने पति और परिवार का आर्थिक रूप से भरण-पोषण कर सकता है, इसलिए सशक्तिकरण वित्तीय पहुँच को सुगम बनाता है। अगर एक महिला अपनी कीमत जानती है और सशक्त है, तो उसके साथ शारीरिक, यौन या मानसिक रूप से किसी भी तरह का दुर्व्यवहार नहीं किया जा सकता। आज की दुनिया में, अधिक से अधिक महिलाएँ हर उद्योग में भाग ले रही हैं। महिलाओं को अध्यक्ष, नेता, कम्यून प्रमुख जैसे उच्च-स्तरीय पद दिए जाते हैं। और महिलाएँ सशक्तिकरण के महत्व को समझती हैं, इसलिए यह संभव है।

महिला सशक्तिकरण के उदाहरण

भारत के सबसे महत्वपूर्ण वर्तमान आंदोलनों में से एक महिला सशक्तिकरण है, जिसकी नींव कई भारतीय महिलाएँ रख रही हैं। अपने काम और परोपकारी कार्यों के प्रति अपनी अटूट निष्ठा के कारण, वे निस्संदेह सभी के लिए प्रेरणा का स्रोत हैं। उनमें से कई दुनिया भर में प्रसिद्ध और पूजनीय हैं, और उनमें से कुछ ऐतिहासिक हस्तियाँ भी हैं। निस्संदेह, उन्हें हमेशा याद रखा जाएगा। ये सशक्त महिलाएँ मुझे बहुत प्रेरित करती हैं, और मैं चाहती हूँ कि दुनिया की हर महिला उनके बारे में जाने और उनसे प्रेरणा ले। भारत देश में हो रहे बदलावों को अपनाने के लिए तैयार है।

महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें समाज की मुख्यधारा में लाना अब एक वास्तविकता है। भारत में, महिला सशक्तिकरण का अर्थ है विभिन्न माध्यमों से महिलाओं के समग्र कल्याण में सुधार लाना, जैसे जागरूकता और आत्मरक्षा तकनीकों को बढ़ावा देना, उन्हें समान अवसर प्रदान करना, और उन्हें शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करना। सीधे शब्दों में कहें तो, यह महिलाओं को अपने जीवन के निर्णय लेने के लिए सक्षम बनाता है, जिससे स्वयं का और समाज का विकास होता है। यहाँ, समग्र रूप से समाज उन्हें बेहतर बनाने और उनके व्यक्तिगत विकास में सहयोग देने के लिए मिलकर काम करता है। वे महिलाओं के साथ समान व्यवहार करते हैं और महिलाओं को उनकी शैक्षिक और वित्तीय ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सशक्त बनाते हैं। लड़कियों का आत्मविश्वास बढ़ाने के कई तरीके हैं, जिनमें महिलाओं के खिलाफ हिंसा को कम करना, उन्हें शिक्षा प्रदान करना और उन्हें रोजगार के अवसर प्रदान करना शामिल है। भारत सरकार महिलाओं की अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित करती है, उन्हें अपने निर्णय लेने का अधिकार देती है, और उन्हें सम्मान के साथ परिणामों का सामना करने के लिए तैयार करती है।

मदर टेरेसा

अंजेज़े गोन्झे बोजाक्सिउ शायद अब तक का सबसे महान नाम हैं। रोमन कैथोलिक चर्च उन्हें संत टेरेसा की उपाधि देता है। गरीबों

की मदद करने और उनकी कठिनाइयों को बेहतर ढंग से समझने के लिए उनके साथ रहने के उनके प्रयासों के लिए उन्हें दुनिया की सबसे निस्वार्थ हस्तियों में से एक माना जाता है। 1979 में, उन्हें उनके मानवीय प्रयासों के लिए नोबेल शांति पुरस्कार भी मिला। 1937 में, उन्होंने नन बनने की शपथ ली और उसके तुरंत बाद, उन्होंने अपना जीवन गरीबों की मदद के लिए समर्पित कर दिया।

इंदिरा गांधी
यह तथ्य कि इंदिरा गांधी हमारे देश की एकमात्र महिला प्रधानमंत्री हैं, अपने आप में बहुत कुछ कहता है। उनके साहसी रवैये ने लाखों देशवासियों का दिल जीत लिया। वह एक उत्साही और सशक्त नेता थीं जिन्होंने महिला सशक्तिकरण के लिए नेतृत्व किया। फिर भी, वह अजेय रहीं और उन्होंने देश को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाया। उन्होंने अपनी पार्टी की स्थापना की और अपने समर्थकों के सहयोग से देश पर शासन किया। वह सभी महिलाओं के लिए एक आदर्श हैं।

कल्पना चावला
अंतरिक्ष में जाने वाली पहली भारतीय महिला होने के कारण, कल्पना चावला का नाम भारतीय इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। उनका जन्म हरियाणा के करनाल में हुआ था, लेकिन नासा में काम करने के बाद, वे अमेरिका में बस गईं। दुर्भाग्य से, पृथ्वी पर वापस आते समय उनका अंतरिक्ष यान टूट गया और उनका निधन हो गया। वे साहस और दृढ़ता की एक सच्ची मिसाल हैं, और लाखों महिलाएँ जीवन भर उनसे प्रेरणा लेती रहेंगी।

सुधा मूर्ति
भारत की अग्रणी आईटी कंपनियों में से एक, इंफोसिस की रीढ़। उन्होंने इंजीनियर, उद्यमी, लेखिका और समाजसेवी के रूप में अपने करियर के विविध आयाम स्थापित किए हैं। सुधा मूर्ति के प्रयासों को पद्म श्री और पद्म भूषण सहित कई राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। अपनी लेखनी के माध्यम से, उन्होंने लैंगिक असमानता, गरीबी, स्वास्थ्य सेवा सुधार, शिक्षा सुधार, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों आदि जैसे ज्वलंत सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता बढ़ाने का भी प्रयास किया है।

इंद्रा नूयी
जब इंद्रा नूयी दुनिया के दूसरे सबसे बड़े संगठन की सीईओ बनीं, तो उन्होंने खुद को दुनिया की सबसे प्रभावशाली महिलाओं में से एक के रूप में स्थापित किया। इंद्रा ने येल स्कूल ऑफ मैनेजमेंट और आईआईएम कोलकाता से स्नातक किया है। वह स्कूल में एक मेधावी छात्रा थीं। पेप्सिको के सीईओ का पद छोड़ने के बाद, वह सबसे बड़ी ई-कॉमर्स कंपनी अमेज़न के निदेशक मंडल में शामिल हो गईं। वह लगातार दुनिया की सबसे प्रभावशाली महिलाओं की सूची में शामिल होती हैं।

ऐश्वर्या राय बच्चन
"दुनिया की सबसे खूबसूरत महिला" का खिताब ऐश्वर्या राय बच्चन के नाम है। उन्होंने दुनिया भर की प्रतियोगियों को हराकर 1994 का मिस वर्ल्ड का खिताब अपने नाम किया। ऐश्वर्या ने बॉलीवुड पर भी राज किया, जहाँ उनकी अभिनय प्रतिभा ने सभी को मंत्रमुग्ध कर दिया। वह नेक कामों में भी सक्रिय हैं और अक्सर पोलियो कैंप और नेत्रदान शिविर चलाती हैं। उन्हें श्रद्धांजलि स्वरूप लंदन के मैडम तुसाद में उनकी प्रतिमा स्थापित की गई है।

प्रियंका चोपड़ा
प्रियंका चोपड़ा का नाम विश्व स्तर पर प्रभावशाली महिलाओं की सूची में शामिल हो गया है। प्रियंका महिला सशक्तिकरण की सच्ची मिसाल हैं क्योंकि उन्होंने अपना रास्ता खुद बनाया। मिस वर्ल्ड 2000 का खिताब जीतने के बाद उन्होंने बॉलीवुड में अपनी किस्मत आजमाने के लिए कदम रखा; इतिहास खुद को दोहराता है। अपनी अभिनय क्षमता से उन्होंने भारत और दुनिया भर में लाखों लोगों का दिल जीत लिया। प्रियंका ने अपने अमेरिकी टेलीविजन शो क्वांटिको से अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त की। फिल्म मैरी कॉम में उनके अभिनय के लिए भी उनकी प्रशंसा हुई। वह एक देशभक्त लौह महिला हैं जिन्होंने अपने जीवन की सभी बाधाओं को खुशी-खुशी पार किया है।

महिला सशक्तिकरण के विभिन्न प्रकार
हालाँकि यह एक सीधा-सादा वाक्यांश लग सकता है, लैंगिक समानता अब दुनिया भर के संगठनों और नीति निर्माताओं के लिए एक गंभीर मुद्दा बन गया है। ऐसा इसलिए है क्योंकि ज़्यादातर लोग इस बात से सहमत हैं कि महिलाओं के अधिकार लंबे समय से छीने जा रहे हैं। अगर उन्हें समान अधिकार मिलें तो उनके पास ज़्यादा अवसर होंगे। चूँकि कई संस्कृतियों में पुरुष प्रधानता को आम तौर पर स्वीकार किया जाता है, इसलिए यह मुद्दा कभी भी सीधा नहीं रहा। इसके परिणामस्वरूप अन्य मुद्दे भी सामने आते हैं, जिनमें महिलाओं के भेदभाव, यौन शोषण और उत्पीड़न के अनुभव शामिल हैं। महिला सशक्तिकरण पितृसत्तात्मक विचारधारा को चुनौती देने और ऐसे मानक बदलाव लाने के लिए अस्तित्व में आया जो अंततः महिलाओं के लिए फ़ायदेमंद होंगे क्योंकि इसका लंबा इतिहास और लोगों की मान्यताओं में इसकी मज़बूत नींव है। महिलाओं को कई तरह से असमानता का सामना करना पड़ता है, जैसे कि उनके जीवनसाथी द्वारा उन्हें रोज़गार देने से मना करना या पुरुषों द्वारा उनके उत्तराधिकार के अधिकार छीन लेना।

1. आर्थिक सशक्तिकरण में आय और पारिवारिक संसाधनों पर नियंत्रण, संपत्तियों का स्वामित्व, रोज़गार के अवसर और बाज़ारों तक पहुँच, तथा आर्थिक निर्णय लेने वाली भूमिकाओं में प्रतिनिधित्व शामिल है। आर्थिक सशक्तिकरण के ज़रिए, महिलाएँ वित्तीय स्वतंत्रता प्राप्त कर सकती हैं, कार्यबल में शामिल हो सकती हैं, और आर्थिक शक्ति के पदों पर समान अवसर प्राप्त कर सकती हैं।
2. सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण में महिलाओं के प्रति भेदभाव का अभाव, अपने शरीर पर नियंत्रण, यौन और घरेलू हिंसा से मुक्ति, परिवार नियोजन सेवाओं तक पहुँच, सामाजिक स्थानों में अधिक दृश्यता और महिलाओं को पुरुषों के अधीन रखने वाले सांस्कृतिक मानदंडों में बदलाव शामिल हैं। संस्कृति महिलाओं को समान अवसर प्रदान करने का एक तरीका है और विविधता का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण हिस्सा है। सशक्तीकरण के विचार से प्रेरित रीति-रिवाजों को बिना किसी जाँच-पड़ताल के, महिला अधिकारों के आधार पर परखा जाना चाहिए। सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण न केवल महिलाओं को अपने शरीर पर नियंत्रण प्रदान करने के लिए, बल्कि उन्हें अपने जीवन को बेहतर बनाने के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करने के लिए भी आवश्यक है।
3. कानूनी सशक्तिकरण, कानूनी अधिकारों के बारे में ज्ञान और जागरूकता बढ़ाने वाले कानून बनाने का ढाँचा प्रदान करता

है। इससे महिलाओं के अधिकारों के लिए कानूनों को बढ़ाने के लिए व्यक्तियों को संगठित होने का अवसर मिलेगा, और न्यायिक प्रणाली का उपयोग करके उपरोक्त सुधार लाने में मदद मिलेगी।

भारत में महिला सशक्तिकरण

जब हम प्राचीन भारतीय ग्रंथों और धर्मग्रंथों पर नज़र डालते हैं, तो हमें सशक्त महिलाएँ दिखाई देती हैं। इसके अलावा, वे ही वह धुरी थीं जिनके इर्द-गिर्द सभ्यताएँ फलती-फूलती थीं। लेकिन, आक्रमणों और आक्रमणों की एक श्रृंखला ने सभ्यता के लिए ख़तरा पैदा कर दिया। इस अंधकारमय दौर में महिलाओं को हर तरह की यातना और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा।

कारण चाहे जो भी हो, इसमें कोई संदेह नहीं है कि हम अभी भी दुनिया भर में महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए संघर्ष कर रहे हैं। हर गुजरते दिन के साथ, यह मुद्दा और भी मुखर होता जा रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए कई योजनाएँ शुरू की हैं। ये योजनाएँ महिलाओं को आगे लाकर महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास का मार्ग प्रशस्त करेंगी।

अब आप पूछेंगे कि भारत में महिला सशक्तिकरण योजनाओं की क्या ज़रूरत है? इसके कुछ निर्विवाद कारण इस प्रकार हैं:

- बढ़ी हुई जीडीपी: महिलाएं जनसंख्या का 50% हिस्सा हैं। वे विभिन्न क्षेत्रों में भारतीय अर्थव्यवस्था में अपार योगदान दे सकती हैं।
- शिक्षा: एक शिक्षित महिला के पास समाज को ऊपर उठाने का ज्ञान और साधन होता है। क्या आपको वह लोकप्रिय अफ़्रीकी कहावत याद है? "अगर आप एक पुरुष को सिखाते हैं, तो आप एक व्यक्ति को सिखाते हैं, लेकिन अगर आप एक महिला को सिखाते हैं, तो आप एक राष्ट्र को सिखाते हैं।"
- गरीबी के खिलाफ लड़ाई: एक गरीब परिवार के लिए ज़्यादा कमाने वाले सदस्यों का होना एक वरदान है। परिवार की महिलाओं को सशक्त बनाने से गरीबी, खासकर बहुआयामी गरीबी, को खत्म करने में मदद मिल सकती है।
- सामाजिक न्याय: हमारे संविधान द्वारा प्रदत्त अधिकार सामाजिक न्याय पर ज़ोर देते हैं। महिलाओं को सशक्त बनाने से हमारे समाज में गहराई तक समाई पितृसत्ता का अंत हो सकता है।

महिला सशक्तिकरण में समय की भूमिका

महिला सशक्तिकरण को एक निश्चित परिणाम के बजाय एक प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है और इसे अ-सशक्त से सशक्त बनने की ओर विकास के रूप में वर्णित किया जाता है। इस प्रकार, महिला सशक्तिकरण की परिभाषा पहले से ही इसके विकास को समझने में समय के महत्व को रेखांकित करती है। हालाँकि, आश्चर्यजनक रूप से, हम इस बारे में बहुत कम जानते हैं कि समय के साथ महिला सशक्तिकरण कैसे विकसित हो सकता है।

प्रस्तावित त्रि-आयामी महिला सशक्तिकरण मॉडल, सशक्तिकरण के विभिन्न आयामों को अलग करके, महिला सशक्तिकरण के विकास की हमारी समझ को और गहरा कर सकता है। हालाँकि, हम केवल इस बारे में अनुमान लगा सकते हैं कि ये तीनों आयाम किस क्रम में विकसित हो सकते हैं। इसके अलावा, हम इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हस्तक्षेपों तक पहुँच और व्यक्तिगत, संबंधपरक और सामाजिक आयामों पर महिला सशक्तिकरण के विकास के बीच का संबंध समय पर निर्भर हो सकता है। सबसे पहले, यदि हम सूक्ष्म-वित्त सेवाओं के संदर्भ में दिए जाने वाले प्रशिक्षण और इस प्रकार महिला सशक्तिकरण के निचले स्तर के विकास के उदाहरण पर विचार करें, तो हम अपेक्षाकृत कम समय में व्यक्तिगत सशक्तिकरण के विकास की उम्मीद कर सकते हैं।

एक ऐसी दुनिया जहाँ महिलाएँ पहले से ज़्यादा करने का विकल्प चुन सकें, केंद्रित ध्यान से बनाई जा सकती है। महिलाएँ "आप कर सकती हैं" सुन सकेंगी, न कि "आप नहीं कर सकतीं"। पुरुषों और महिलाओं के बीच समानता सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण मानवाधिकार है। एक महिला को शांति और सम्मान के साथ अपना जीवन जीने का अधिकार है। इसके अलावा, महिलाओं का सशक्तिकरण विकास को आगे बढ़ाने और गरीबी कम करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। जिन महिलाओं का अपने जीवन पर अधिक नियंत्रण होता है, वे अगली पीढ़ी के साथ-साथ पूरे परिवार और समुदाय के स्वास्थ्य और उत्पादकता के अवसरों को बेहतर बनाती हैं।

यह तथ्य कि लैंगिक समानता आठ सहस्राब्दी विकास लक्ष्यों में से एक है, इसके महत्व को उजागर करता है। यह स्वीकार किया जाता है कि लैंगिक समानता प्राप्त करना अन्य सात लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। हालाँकि, असमानता का सबसे व्यापक और स्थायी रूप अभी भी महिलाओं के प्रति भेदभाव है, जिसमें लैंगिक हिंसा, आर्थिक भेदभाव, प्रजनन स्वास्थ्य में असमानताएँ और हानिकारक पारंपरिक प्रथाएँ शामिल हैं।

निष्कर्ष

महिलाओं को अपनी ज़रूरतों को प्राथमिकता देने और अपने अधिकारों को जताने में सक्षम बनाना महिला सशक्तिकरण के लिए बहुत ज़रूरी है। गरीबी से लड़ने के लिए माइक्रोफाइनेंस को एक कामयाब रणनीति बनाने के लिए, इसे ऐसे छोटे-मोटे बिज़नेस बनाने में इस्तेमाल किया जाना चाहिए जो कमाई कर सकें। कुल मिलाकर आर्थिक विकास इस बात पर निर्भर करता है कि महिलाओं की क्षमता में निवेश किया जाए और उन्हें अपनी पसंद ज़ाहिर करने की आज़ादी दी जाए। लंबे समय से, यहाँ संयुक्त राज्य अमेरिका में और पूरी दुनिया में, महिला सशक्तिकरण का सवाल सार्वजनिक चर्चा में सबसे आगे रहा है। अब महिलाओं को सशक्त बनाना और उन्हें समाज की मुख्यधारा में शामिल करना संभव है। भारत में महिला सशक्तिकरण पहलों का लक्ष्य महिलाओं की कुल मिलाकर भलाई को बढ़ाना है। इन पहलों में कई विषय शामिल हैं, जैसे जागरूकता बढ़ाना और आत्मरक्षा के तरीके सिखाना, समान अवसर बनाना, और शिक्षा और वोकेशनल ट्रेनिंग के ज़रिए महिलाओं को सशक्त बनाना।

संदर्भ

1. वेलु, पलानी। स्व-रोज़गार के माध्यम से ग्रामीण महिलाओं का सशक्तिकरण - सलेम ज़िले के इडापडी तालुका के विशेष संदर्भ में एक अध्ययन। शानलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मैनेजमेंट। 2013;1:16-24।
2. गुप्ता, श्रद्धा, द्विवेदी, सुबोध, झा, शशि। भारत में स्व-नियोजित महिलाएँ: अवसर और चुनौतियाँ। जर्नल ऑफ द एशियाटिक सोसाइटी। 2023;96:17।
3. गुप्ता, श्रद्धा, झा, शशि, द्विवेदी, सुबोध। स्व-रोज़गार के माध्यम से महिला सशक्तिकरण: एक ग्रंथसूची विश्लेषण। 2023;72:32।

4. मीनाक्षी, के.एच., भट, बी. स्वयं सहायता समूह: भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए एक प्रभावी दृष्टिकोण। पैरीपेक्स इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च। 2022. p. 74-76। DOI: 10.36106/paripex/1706124।
5. दुर्गारानी, एम., गोकिलावानी, आर. स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण: कोयंबटूर जिले में एक अध्ययन। 2015;12:363-372.
6. मीना, ए., अंसारी, ए. भारत में स्वयं सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण पर सूक्ष्म वित्त की प्रभावशीलता पर अध्ययन। अंतर्राष्ट्रीय स्वास्थ्य विज्ञान पत्रिका। 2022. DOI: 10.53730/ijhs.v6nS2.8136।
7. सी, परमशिवन, जी, रविचंदिरन। सरन्या योजना के माध्यम से महिलाओं का सशक्तिकरण: केरल में एक स्व-रोजगार पहल। 2024।
8. जयसवाल, नीलमणि, साहा, सुदेशना। भारत में महिला सशक्तिकरण - चुनिंदा सरकारी पहलों का एक अध्ययन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंटिफिक रिसर्च एंड रिव्यूज़। 2024;13:95-114. DOI: 10.37794/IJSRR.2023.13110।
9. चक्रवर्ती, अर्नब, शर्मा, प्रीति, चतुर्वेदी, चिन्मयी। महिला सशक्तिकरण और गरीबी उन्मूलन पर स्वयं सहायता समूहों का बढ़ता प्रभाव: विश्वसनीयता का एक अध्ययन। एसएसआरएन इलेक्ट्रॉनिक जर्नल। 2019. DOI: 10.2139/ssrn.3407126।
10. देवी, मंजू, वर्मा, गीता, गभरू, आरती, चौहान, आंचल। भारत में महिला सशक्तिकरण पर स्वयं सहायता समूह का प्रभाव। 2023. DOI: 10.5281/zenodo.7437801।
11. कदम, कीर्ति। सरकारी योजनाओं की प्रभावशीलता: सबसे व्यापक रूप से प्रयुक्त योजनाओं की आलोचनात्मक समीक्षा। 2022।
12. तिगारी, डॉ., ऐश्वर्या, आर. स्वयं सहायता समूह: महिला सशक्तिकरण की दिशा में एक प्रभावी दृष्टिकोण। शानलैक्स इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इकोनॉमिक्स। 2020;8:3192. DOI: 10.34293/economics.v8i3.3192।
13. सैनी, प्रीतिका, मल्होत्रा, सुनीता, भूषण, संजय। महिला उद्यमियों का सशक्तिकरण: सरकारी सहायता कार्यक्रमों के प्रभाव और उनके सामाजिक-आर्थिक प्रभाव का विश्लेषण। मुद्रा जर्नल ऑफ फाइनेंस एंड अकाउंटिंग. 2024. p. 141-166।
14. आलम, आफ़ताब, खान, शमा। उद्यमिता पर स्वयं सहायता समूह के प्रभाव पर एक अध्ययन। 2022;9:114-118.
15. कुमार, जे. सुरेश, शोभना, डॉ. डी. भारत में महिला उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए सरकारी नीतियों की प्रभावशीलता का विश्लेषण, 2024.

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.